ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः   ॥ वन्दे-गुरुदेव ॥   श्री आनन्दरूप सुवर्णमाला-ग्रन्थ २७

पंजाब देश पावन कर्ता श्रीमज्जैनाचार्य्य कविवर्य्य परमपूज्य श्रीमन्नन्दलालजी महाराज—

विरचित—

श्री गौतम-पृच्छा

सम्पादक—

स्थविरपद विभूषित अनेक गुणगणाऽलंकृत स्वर्गीय भव्यात्मा श्रीमान् स्वामी गोविन्दरामजी महाराज के शिष्य

पण्डित मुनि श्री छोटेलालजी महाराज ।

प्रकाशक —

श्री जैन-बिरादरी, पसरूर (पञ्जाब)

वीर निर्वाण संवत् २४६५
प्रथमबार १०००

मूल्य ≡)

विक्रमीय १९९६
सन् १९३९ ई०

शुद्धि-अशुद्धि पत्रम्

श्लोकाङ्क	पक्ति	सं०	अ० शब्द	शुद्ध-शब्द	श्लोकाङ्क	पंक्ति
१	८	११	पव	पूर्व	१४५	९
१	१०	१२	लसु	सु	१४६	११
५४	१०	१३	(रो)	(रोग)	१६६	३
८०	१२	१४	चटे	चूंटे	१८२	५
८५	३	१५	हो	होय	१९०	४
१२८	६	१६	सख	सख्ख	स्तुति नं० १	२
-४	६	१७	धम्म	धर्म्म	,, ,, २	६
१३८	१३	१८	मही	मल्लि	,,	७
१४४	७	१९	आहि	आदि	,,	८
,	८	२०	,,	,,	,,	१२

९	सजो	सयोग
१०	नात राजो	नातरा जोराय

जन्म सम्वत् १९६०　　जैन मुनि श्री छोटेलालजी महाराज　　दीक्षा सम्वत् १९७६

शुद्धि-अशुद्धि पत्रम्

समर्पण
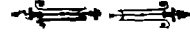
परम पूज्य पावन स्वर्गीय श्री गुरुदेव जी महाराज के अपार अनुग्रह से
यह जो आनन्दप्रदायक श्री सुवर्णमाला स्वरूपी यह प्रथम पुस्तिका
निर्विघ्नतया सम्पादित हो सकी, अतः सहर्ष सादर सोपलक्ष-
आपके कर-कमलों मे समर्पण (भेंट) करते हुए
अतीव आनन्द की प्राप्ति हुई ।

भवदीय शिशु—

"मुनि छोटेलाल"

२१-११ ३९

शुद्धि-अशुद्धि पत्रम्

॥ गुर्वावलि ॥

मनहर—छन्दः ॥ पूज्य जी **महा निधान श्रीमन जी** आदि जानः तत् शिष्य अन्तेवासी पूज्य **नाथूराम** जी ॥

तत् शिष्य विनयवान श्री बुद्धिवन्त जानः स्वामी श्री **रायचन्द** ज्ञान के सुधाम जी ॥

तत शिष्य पदांबुज गुरु के सेवन हार, स्वामी श्री **रतिराम** घोर पद पाम जी ।

तिनके प्रसाद ज्ञान तत्व निरधार करः कवि **नन्दलाल** कही पावत आराम जी ॥१॥

तत शिष्य श्री **जौंकीराम** जान तिनके सुशिष्यः श्री मुनी **चेतराम** बडे क्षिमा गुणवानजी ।

तिन के चरण रज श्री मुनि **घासीरामः** तिनके **गोविन्दराम** करत लाभ काम जी ।

तत शिष्य गुणी **लघुलाल** मानः कर ज्ञान का बखान शुद्ध षट द्रव्य का विद्वान जी ।

सवत गुन्नीस ब्यासी किया कोटले चौमासी, गुरु दिया गुण ग्रामी मैने पायो विसराम जी ॥ २

प्रस्तावना

"अप्पा कत्ता विकत्ताय, सुहाणय दुहाणय" 'गणधरदेव'

अय जैन जनता ! जाग और उठ यह समय तेरे शयन करने का नहीं है। जिस समय के कुत्सित कालचक्र का जाल चारों ओर तना जा रहा हो, और तू गहन निद्रा मग्न सोई हुई पड़ी रहे। अब तू बहुत सो चुकी और अधिक काल सोने से अनेक पाप बढ़ते चले जा रहे हैं। तेरी परस्पर की घरेलू फूट से घर लुट गया, धर्म हानता से विधर्मी-पन आगया। और तू अब तक चिर-स्थायी निद्रा ले रही है मत सो अब जाग और उठ ! अय प्रिय जैनवर्ग !

तैने कई बार "पिट्ठी मंस न खाइज्जा" वाक्य का पाठ सुना होगा—जिसका के अर्थ पराई निन्दा पीठ का मांस खानेके सदृश है। ओह ! छि २ परन्तु तैने तो कभी इधर ध्यान दिया ही नहीं, अविद्या जन्य अज्ञानान्धकार इस प्रकार तीव्र गति से बढ़ रहा है जैसे मध्याह्नकालोत्तर में छाया बढ़ा करती है।

तेरे पूर्वजों ने अनेक कठिनाइयों से सत्य धर्म का प्रचार किया था, परन्तु आज तेरे नेता कलहकारी सम्प्रदाय वाद अर्थात टोलीवाद में पड़ कर अपने साधु (शुद्ध हृदय) भाई बान्धवों से बोलनेसे भी सकुच सङ्कोच से काम लेते हुए, इतने तक कह दिया जाता है के हमारी और इनकी समाचारी एक नहीं है।

भोली जनता ! महावीर प्रभुने समाचारी प्रीती निज मुखारविन्द से सगठनके लिये आदेश की थी या इनको भिन्न २ टोलियों में करने के लिये। किञ्चित् स्थिर चित्त होकर विचार ! और जान कर तेरा जीवन यात्राका बेडा किधरको जा रहा है।

तेरी यह वर्तमान कालीन प्रगाढ़ निद्रा देखते हुए विचारज्ञों के हृदय भी डगमगा जाते हैं।

नहीं ! अब तो समय आत्म कल्याणकारी सुधार करने का है। जिस कार्य को पूरा करने में सहस्रों वर्ष लगा करते थे, वह आज सरलता

से थोडे ही काल मे सुचरित्रता से सिद्ध हो सकता है, परन्तु सुचारित्र सम्यग्ज्ञान के बिना नही हो सकता, यथा–'पढम नाणं०' पहले ज्ञान पुन चारित्र इन दोनो के मेल से मोक्ष प्राप्ति होती है ।

'ज्ञान क्रियाभ्या मोक्ष' —अतएव सिद्ध हुआ के ऐसा सार्वदेशिक-आर्य-शास्त्रीय भाषा के ग्रन्थरत्नो का प्रचार किया जाय । जिनके पठन पाठन श्रवणरूप फल स्वरूप अनुकरण करने से जिनसे परस्पर द्वेष, दुराग्रह, फूट, निन्दा जनित क्लेश दूर हो जॉय । हिंसा और झूठ सब पापो का मूल है । पूर्वोक्त सब पापोका परित्याग करो ।

हे भव्य जीवो ! हिंसादि पाप कर्मोका फल दु ख ही दु ख है । जो पुस्तक आपके श्री कर कमलो मे पधारी है पाप कर्मोके फल को दर्शाने वाली कर्म विपाक स्वरूप है । पुस्तक लघु होने पर भी अतीव शिक्षा प्रद है । अन्त मे कुछ स्तुति विशिष्ट भजन भी दिये गये है । इन सबके निर्माता कविवररत्न जैनाचार्य श्रीमान १००८ श्री नन्दलाल जी महाराज है । जो अठारवीं शताब्दी मे अपनी प्रतिभाशाली बुद्धि द्वारा लब्धि-प्रकाश, ज्ञान प्रकाश, मिथ्या व कन्दला इत्यादि अनेक ग्रन्थ रत्नो का निर्माण कर गये है । परन्तु शोक ! इस समय भी ऐसे ऐसे धर्म साहित्य रत्न ग्रन्थो की ओर ध्यान न दिया जाने से प्राय ऐसे २ अमूल्य सुन्दर ग्रन्थ अनुपलब्ध होते चले जा रहे है, जिसका फल निरङ्कुश पशुता के अतिरिक्त और क्या हो सकता है ।

मेरी हार्दिक आशा है कि इसके प्रतीकार के लिये ऐसे सुगमार्थ ग्रन्थो का उद्धार करना मनुष्यमात्र का परम कर्तव्य होना चाहिये । यन्त्रालयस्थ कार्य और दृष्टि दोष क्षन्तव्य हो ।

गच्छत स्खलन क्वापि, भवत्यव प्रमादत । हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समा दधति सज्जन ॥१॥

सम्पादक—

मुनि श्री छोटेलाल

(चातुर्मास सम्वत् १९९६ पसरूर दिवस दीपावली)

श्रीमज्जैनाचार्य्य कविवर्य्य श्रीमान् नन्दलालजी महाराज

विरचित—

श्री गौतम-पृच्छा

संपादक—जैन मुनि श्री छोटेलालजी महाराज

मंगलाचरणम्

णमो अरिहन्ताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

एसो पंच णमुक्कारो सव्व पाव पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढम हवई मंगलं ॥

सवइयां ३१ सा नन्द बावनी से उद्धृत

उत्तम कनक देह उपमा न काहू तेह; चूल हेम सम तन ज्योती मोती नीर की ।

लक्षण हजार आठ कर्म दल दीन काट; योजन गमन रूप बानी है गम्भीर की ॥

पत्तर फटक मई ताहू पै विराजमान; वचन प्रकाशे प्रभु घृट जैसे खीर की ।

तरण तारण देव सुर पति सारे सेव; ऐसी महिमा लोक में विराजे महावीर की ॥१॥

दोहा—ज्ञाता धर्म कथा माही, कथा छै आहुट कोडि । तिण माहिला भाव छै, सांभल जो मद मोडि ॥१॥

शक्या कंख्या मत करो, इण माही बहु ज्ञान । गौतम स्वामी पूछिया, भाख्यो श्री वर्द्धमान ॥२॥

कर्म विपाक सरूप छै, जिन विध चेतन राय । तिण विधि बान्धे भोगवे, इण में शक न काय ॥३॥

रोडक-छन्द—अजब ज्ञान भगवन्त, अति भी करण संसारा । ज्ञान भानु प्रकाश, तिमर-मिथ्यात्त विदारा ।

होवे निर्मल ज्ञान, कुगुरु वचन नहीं सेवे । रावत शुभ परिणाम, जन्म को लाहो लेवे ॥ ४ ॥

दोहा—एह अतिशय छै ज्ञान को, ज्ञानी वचन अडोल । सावधान थई सांभलो, वचन जवाहर मोल ॥ ५ ॥

श्री गौतम स्वामी श्री वीर प्रभु से प्रथम प्रश्न इस प्रकार पूछते हैं ॥

प्रश्न ॥ १ ॥ सोरठा—श्री श्री गौतम स्वामी, पूछैं श्री वर्द्धमान ने । कांणा होवे जीव, कौन ? कर्म प्रभाव थी ॥ ६ ॥

उत्तर ॥ सोरठा—उत्तर दें जिनराज, रे वच्छ ! गौतम सांभलो । फल फूल वनराय, अति कर बीधे जे नरा ॥ ७ ॥

प्रश्न ॥ २ ॥ सोरठा—पूछै गौतम स्वामी, कहो स्वामी वर्द्धमानजी । कुब्जा (डा) होवे जीव, कौन ? कर्म प्रभाव थी ॥८

उत्तर ॥ सोरठा—भाखें श्री जिनराय, पूर्व भव कोई जीव ने । एकेन्द्री बहु जीव, चूर्ण कीधा हाथसुं ॥ ६ ॥

प्र० ॥ ३ ॥ सो० ॥ गौतम पूछै एम, हाथ जोड़ि भगवन्त कुं । खोजो होवे कम, भाखो श्री भगवन्त जी ॥ १० ॥

उ० ॥ सो० ॥ उत्तर दें जिनराज, र वच्छ ! गौतम सांभलो । पूर्व वैदरो कीध, तिण कर्मे खोजो होवे ॥ ११ ॥

प्र० ॥ ४ ॥ सो० ॥ पूछै गौतम स्वामी, हाथ जोडी भगवन्त ने । आंधो होवे जीव, कौन ? कर्म किया पिछे ॥ १२ ।

उ० ॥ इन्दव-छन्द ॥ उत्तर दे महावीर प्रभु, सुन हो वच्छ ! गौतम बात हमारी ।

पानी माही त्रस जीव कु डार के, डोवत हैं मूर्ख अविचारी ।

हांस करी कर्म बन्ध करे, अरु भोगत हीं मुख करे पुकारी ।
वीर कहैं सुन हो वच्छ ! गौतम इण विध होवत अध अधागी ॥ १३ ॥
प्र०॥ ५ ॥ सो० ॥ पूछै गौतम स्वामी, अर्ज सुनो शासन धणी । बहिरा होवे जीव, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥ १४ ॥
॥ उत्तर ॥ मारवती-छन्दः ॥ वीर कहे सुन गौतम राय, स्व हाथ छेदे छै वनराय ।
छेदन भेदन जेह कराय, तिन कर्मे बहिरो (बोला) एह थाय ॥ १५ ॥
प्र० ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ पूछै गौतम स्वामी, प्रभु ने शीस निमाय के । गूंगा होवे जीव, कौन ? कर्म प्रभाव थी ॥ १६ ॥
उत्तर ॥ चामर-छन्दः ॥ चार सच चार तिन्थ मुखसुं उत्थापते । वीतराग धर्म की जो हीलना अलापते ।
साधु देख आँख मीच नासिका मलावते । तेन पाप अहो वच्छ ! गूंगा जन्म पावते ॥ १७ ॥
प्र० ॥ ७ ॥ सो० ॥ भाखे गौतम स्वामी, भो सतगुरु ! प्रकाशिये । कुष्ठी होवे जीव, कौन ? कर्म प्रभाव थी ॥ १८ ॥
उ० ॥ त्रुटक-छन्दः ॥ सुन हो वच्छ ! गौतम संशय हर । सोना रूपा ना आगर कर ॥
षट्काया ना आरम्भ धर । एह पूर्व कर्मे कुष्ट भर ॥ १९ ॥
प्र० ॥ ८ ॥ सो० ॥ प्रश्न पूछै एम, हाथ जोडी भगवन्त ने । जो करे जम्म काज, अपयश होवे जगत में ॥ २० ॥
उ० ॥ स्रवणी-छन्दः ॥ वीर कहैं सुनो गोयमा साधजी । साहरा वाक्य एह निश्चय आराधजी ॥
सुचित्त औषध तना मेल सग्रह करे । पाप गिने नहीं कर्म अपजस्स धरे ॥ २१ ॥

प्र०॥ ९ ॥ सो०॥ पूछे गौतम स्वामी, कर जोडी सतगुरु भणी । नयना झलमल जोति, होवे कौन ? कर्म थकी ॥२२॥
उ० ॥ सो० ॥ सुन हो गौतम वाक्, पचेन्द्री जे जीवना । ग्रहण किया जे रूप, तिन कर्मे चक्षु झलमले ॥ २३ ॥
प्र० ॥ १० ॥ सो० ॥ गौतम कहैं वर्द्धमान, प्रकाशो शासन धणी । बावना होवे जीव, कौन ? पाप पूर्व किये ॥ २४ ॥
उ० ॥ सो० ॥ सुन गौतम अणगार, लवण तना आगर घना । मेले अति सजोग, कर करावे हर्ष सुं ॥ २५ ॥
प्र० ॥ ११ ॥ सो० ॥ प्रश्न पूछे एह, हाथ जोडी भगवन्त ने । होय भगंदर रोग, दुर्गन्धा किन ? कर्म थी ॥ २६ ॥
उ० इन्दव-छन्द ॥ वीर कहै सुन हो वच्छ ! गौतम; पूर्व कर्म किये फल पावे ।
हाथ सु जीव पंचेन्द्री हने; मन मे कब हू नाही विसरावे ।
राति दिवस परिणाम रहै; हिंस्या आरम्भ सु नाही अघावे ।
पूर्व पाप किये जिसने; सुन गौतम रोग भगदर थावे ॥ २७ ॥
प्र० ॥ १२ ॥ सो० ॥ सो ! केवल भगवान, हाथ जोडी गौतम कहै । पावे कालो रग, कौन ? कर्म किया पिछे ॥ २८॥
उ० ॥ पन्नगी—छन्द ॥ आप कहै भगवन्त सुनो वच्छ ! ज्ञान ए । वचन हमारा तहत्त करि ने जानए ।
जड खोदे वनराय शक नही आन तो । इण कर्मे प्रभाव श्याम वर्ण पानतो ॥ २९ ॥
प्र० ॥ १३ ॥ सो०॥ गौतम कहै गुरुदेव, अर्ज सुनो गुरुदेवजी । द्रव्य लाभ नही होय, कौन ? कर्म जीवडे किये ॥ ३०॥
उ० ॥ चामर-छन्द ॥ श्री महावीर देव उत्तर प्रकाशिया । गौतम आगल प्रभु मुखसु ए भाषिया ॥

द्वेष करी हांस करी अन्तराय देव तो । इण ही कर्म करी लाभ नहीं लेव तो ॥ ३१ ॥

प्र०॥१४॥ सो०॥ प्रश्न चौदमो (१४) एह, पूछे गौतम स्वामी जी । कण्ठ माल होय रोग, कौन ? कर्म किया पिछे ॥३२॥

उ० ॥ चामर-छन्दः ॥ वीर कहे अहो शिष्य ! वचन सुनीजिये । ज्ञान को विचार चित्त माही धर लीजिये ॥

जलचर जीव मार मच्छ को आहारते । इने पाप जीव कण्ठ माल रोग धारते ॥ ३३ ॥

प्र० ॥ १५ ॥ सो० ॥ बाहिर नाही रोग, अन्तर दुःख बहुत रहे । कौन ? कर्म प्रभाव, स्वामी भोगे जीवडा ॥ ३४ ॥

उ० ॥ रौद उच्छाल-छन्दः ॥ प्रभु एह बोले वचन है अमोले हिये गांठ खोली सुनो वाक् मेरा ।

मिथ्या झूठ बोले हृदय मे न तोले कपट को न खोले रहे भ्रम घेरा ॥

झूठी सोस खावे मृषा ही बतावे घनी लांच खावे असत्य का मिलेरा ।

सुनो वच्छ ! गौतम तू ही नर पुरुषोत्तम असी गुप्तरोग्म कर्म को फलेरा ॥ ३५ ॥

प्र० ॥ १६ ॥ सो० ॥ गौतम कहे भगवान, प्रकाशो कृपा करी । होई पत्थरी रोग, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥३६॥

उ० ॥ इन्द्र वज्र-छन्दः ॥ देवाधिदेव महावीर देव । कहे वच्छ ! गौतम सुनो एह गरीव ।

मैथुन सेवन्ति घनी चाह धरके । होवे पत्थरी रोगं इम कर्म करके ॥ ३७ ॥

प्र० ॥ १७ ॥ सो० ॥ गौतम कहे गुरुदेव, दीनदयाल प्रकाशिये । होय सजोग विजोग, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥ ३८ ॥

उ० ॥ इन्द्रवज्र-छन्दः ॥ कहें वीर देव सुनो वच्छ एव । घनी कपट ने कूड माया करेव ।

दगाबाजी कर के घना पाप धारे । इणे कर्म सजोग विजोग पारे ॥ ३९ ॥

प्र० ॥ १८ ॥ सो० ॥ भाखो श्री जिनराज, कुब्जा होई कूबडो । कौन ? कर्म प्रभाव, पावे एह गति जीवडा ॥ ४० ॥

उ० ॥ सो० ॥ भाखे श्री भगवान, सुन वच्छ ! गौतम माहरी । कोटवाल नो काम, कीधा जे पूर्व भवे ॥ ४१ ॥

प्र०॥१९॥सो०॥ कहे गौतम कर जोडि, भो ! ज्ञानी प्रकाशिये । तन मे होई घुरा रोग, कौन ? कर्म प्रभाव ते ॥४२॥

उ०॥ मारगी-छन्द: ॥ महावीर धीर जिन एह तो बताई है । सुन वच्छ आत्मा जिन कर्म मे लगाई है ॥

धर्म जान कूर बाव तालकु खुदावने । इण कर्म करी जीव घुणा रोग पावने ॥४३॥

प्र०॥२०॥सो०॥ हाथ जोडी कहे एम, सतगुरु ज्ञान प्रकाशिये । मीठा बोले जीव, सब ने लागे अति बुरा ॥४४॥

उ०॥ झूलणा-छन्द:॥ श्री वीर कहे सुन हो वच्छ गौतम, जो नर इन्द्री पोषत है ।

जीव की घात करे निशदिन; पर आत्म कु नित्य सोषत है ॥

जीव को मांस भखे निश दिन, पर जीवां निज रोषत है ।

भगवन्त कहे इम पाप थकी, वचन अनगमत आ-रोपत है ॥४५॥

प्र०॥२१॥सो०॥ गौतम कहे जिनराज, मिथ्या सूत्र जे पढे । वलि परूपे आर, मिथ्या रुचि किन कर्म थी ॥४६॥

उ०॥चौबोला-छन्द॥ प्रभुजी कहे सुन हो वच्छ गौतम: ये ही आगम की वानी है ।

जो कोई परजीवा पे कोपे; भृकुटी शाम चढानी है ॥

कूडा (झूठा) आल देवे पर माथे; ये ही पाप मलानी है।
इण कर्मे सुन हो वच्छ गोतम; मिथ्या दिष्ठ वखानी है ॥४७॥

प्र०॥२२॥सो०॥ को इक देवे ज्ञान, श्रावक शिष्य शाखा मर्गी। ते करे अवगुणवाद, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥४८॥

उ०॥सो०॥ सुन गोतम कोई जाव, भांजन तैल अरु घृत के। ऊखाड़ा दे मेल, इण कर्म अपजस लहे ॥४९॥

प्र०॥२३॥सो०॥ गोतम कहे सुनो स्वामी, प्रकाशो केवल धनी। त्रीया नपुंसक होई, कौन ? कर्म किया जिके ॥५०॥

उ०॥ त्रुटक-छन्द:॥ सर्वज्ञ कहे सुन वच्छ वयण। जो कोई कपट करे सयण ॥
माया मोषो पातक करण। नारी नपुंसक इम गण ॥५१॥

प्र०॥२४॥सो०॥ गोतम कहे गुरुदेव, प्रकाशो शासन धनी। कोढी होवे जीव, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥५२॥

उ०॥सो०॥ दावानल वनराई, आप लगावे हाथ सु ॥ जाले जीव अनेक, तिन कर्मे कुष्ठी भवे ॥५३॥

प्र०॥२५॥सो०॥ कहो केवलि भगवान, पूछे गोतम भावसु ॥ जाव जो नितन होई, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥५४॥

उ०॥सो०॥ सुन गोतम गणधार, पूर्व जन्म चर जीवना ॥ मांस भख्या जे होय। इम करी जीव घना पडे ॥५५॥

प्र० ॥२६॥सो०॥ कहे गोतम गणधार। जो कोई होवे जीवडा ॥ जप तप कष्ट कराय। अच्छा ना लागे कोयने ॥५६॥

उ०॥ छप्पय-छन्द:॥ महावीर गुरु कहे सुनो वच्छ! गोतम वाणी। कोई जप तप का ज्ञान रो करे वखाणी।
ज्ञान विषय प्रवान और क्रिया शुद्ध करता। निज बुद्धि आगल और ज्ञान क्रिया नहीं धरतो।

निज क्रिया जप तप तणो मान हकार करे घणा । इण कर्मे सुन गोयमा क्रिया दुर्भागी जग तणा ॥५७॥

प्र०॥२७॥सो०॥ गौतम कहे जिनराय । प्रकाशो केवल धनी । सुन्दर वचन कराय । सबने भंडा प्रणमे ॥५८॥

उ०॥सो०॥ कलह वचन और कड़, कला तनो जे मद करे । इण कर्म अहो वच्छ ! सुंदर वचन लागे नहीं ॥५९॥

प्र०॥२८॥सो०॥ गौतम कहे कर जोड़, सुनो स्वामी वर्द्धमानजी । अशुभ वर्ण लहे जीव, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥६०॥

उ०॥सो०॥ भाखे श्री भगवान, सुन वच्छ ! गौतम साहसी ॥ रूप तनो मद कीय, खोटा वर्ण पावे सही ॥६१॥

प्र०॥२९॥सो०॥ वे कर जोडी ताम, गौतम कहे गुरु देव ने । अन कीया अजसस होय, कौन ? कर्म प्रभाव थी ॥६२॥

उ०॥त्रिभंगी-छन्दः॥ आखे भगवान आगम पद जान अखय-मग्ग ध्यान सदा त्यागी ।

सुन हो गण राग गौतम अणगार विशुद्धा चारित सोभागी ।

जो कोई नार कुटम्ब परिवार ते ईर्षा इक समय लागी ।

इण कर्मे जीव सहे सदीव अजस्स स्वयमेवक दुर्भागी ॥६३॥

प्र०॥३०॥सो०॥ गौतम कहे भगवान, जे कोई ने सस्तके । कड़ी लागे आल, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥६४॥

उ६॥त्रुटक-छन्दः॥ सुन हो वच्छ ! गौतम मुझ वयण, एह वार्ता निश्चय सरदहेण ।

जो परने कड़ी आल देव । सो अपने सस्तक आल लेव ॥६५॥

प्र०॥३१॥सो०॥ गौतम कहे भगवान, कोई जीव ऐसो होवे ॥ प्यारो न लगे कोट, लगे घणो अग खावणो ॥६६॥

उ०॥द्रुतविलंब-छन्दः॥ कहै श्री जिनदेव अरे ! हो गोयमा. पूर्वले भव जीव वाक् आ-लोयमा ॥
वचन करी विश्वास घनो जे देत हैं, तिण कर्मे अणख्यावणो एह जीव हेत है ॥६७॥
प्र०॥३२॥सो०॥ श्री गोयम अणगार, पूछे श्री भगवन्त ने ॥ क्रोध आवे घट माहिं, जावे नही किम कर्म से ॥६८॥
उ०॥दुमल-छन्दः॥ बोले जिन वचन सरस वाणी; परमार्थ ज्ञान बतावत है ।
सुन हो वच्छ ! गौतम वाक् भले; जो नर अति-लोभी थावत है ॥
तृश्ना के वश अकाज करे; कर्म बान्ध घना मर जावत है ।
इस कर्म करी क्रोधी होवत; अनन्तानुबन्धी पावत है ॥६९॥
प्र०॥३३॥सो०॥ पूछे गौतम स्वामी, भाखो केवल धर मुनि ॥ व्रत अने पचक्खाण, उदय न आवे किम कर्मे ॥७०॥
उ० ॥ सारवती-छन्दः ॥ भगवन् कहे सुनो हे गोय !, जो गल फांसी देवत सोय ॥
श्वास घोट के मारत जीव, इण कर्मे अन्तराय सदीव ॥ ७१ ॥
प्र०॥३४॥सो०॥ कहे गौतम कर जोडि, सुनो वीर शासन धनी ॥ बल प्राक्रम होई हीन, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥ ७२ ॥
उ० ॥ शंकर-छंदः ॥ आखें श्री महावीर जी, गौतम ने कर प्रमाद ॥ जे पूर्वे मद्यमांस खावे; करी अधिको स्वाद ॥
तीव्र प्रणामे भोगतो, मन माही अति हर्षन्त ॥ इन कर्मे गौतम जीवड़ा, बहु हीन बल पावन्त ॥७३॥
प्र०॥३५॥सो०॥ शिष्य पूछे भगवन्त, प्रकाशो कृपा करी । पुरुष लिंग को छेद, नारी होवे किन ? कर्मे ॥ ७४ ॥

उ० ॥ मो० ॥ कहै केवल भगवान, मेवे पार सतार मों । रंच न आणे शक, कपट करी नारी होवे ॥ ७५ ॥
प्र०॥३६॥मो०॥ पूछै गौतम स्वामी, वर्द्धमान शासन धनी । मन वाँछित जे वस्तु, कब हून पावें किन कर्मे ॥७६॥
उ०॥इन्दव-छन्दः॥ श्वानी के पूत विजोग करे; और गऊ के वाल विजोग करावे ।
पखियां कु निज पिंजरे घाल के; जास कुटम्ब घनो विललावे ॥
घनो विजोग करे नर नारी को; छोकरा छोकरी ले तडफावे ।
पूर्व भवे विजोग किये; मन वांछित वस्तु कबहू नहि पावे ॥७७॥
प्र०॥३७॥मो०॥ कहै गौतम अणगार, स्वामी जो कोई जीवने । बहुती निन्द्रा आय, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥ ७८ ॥
उ०॥गीती-छन्दः ॥ भगवन्त कहै सुन वच्छ गौतम; एह मुझ उपदेशक ।
जो जीव मदिरा पान ने; निशदिन घनो मुख लेवके ॥
तिम कर्म कर एह जीवडा; निद्रालु आलस अति घना ।
किया कर्म नहीं छूटसी; सुन वचन गौतम मुझ तना ॥ ७९ ॥
प्र०॥३८॥ मो० ॥ गौतम कहै कर जोडि, स्वामी अर्ज सुनीजिये । देही दुर्वल होस कौन ? कर्म पूर्व किये ॥ ८० ॥
उ०॥मो० ॥ कहै स्वामी वर्द्धमान; सुन वच्छ गौतम माहरी । कुर्कट केरो मांस; पूर्व भोग्या जेहने ॥८१॥
प्र०॥३९॥सो०॥ गौतम कहै कर जोडि, वीर तना चरणे नमी । गुंगा बहिरा होय, कौन कर्म प्रभाव थी ॥८२॥

उ०॥ सो० ॥ वीर कहे वच्छ वाक्, जो नर घाले भाकर्मा । ऊपर मेले खार, तिण कर्मे अैसो होवे ॥८३॥
प्र०॥ ४०॥सो०॥ गौतम कहे कर जोड़ि, स्वामी कृपा कीजिये । रुदन घनो जे आय, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥८४॥
उ०॥सो०॥ गौतम प्रते एम, कहे अरिहन्त नाणोरनी । कन्द मूल वन राय, पूर्व भव भोग्या घना ॥८५॥
प्र०॥४१॥सो०॥ भाखे बे कर जोड, गौतम जी भगवन्त ने । हासी बहुती आय, कौन ? कर्म प्रभाव थी ॥८६॥
उ०॥सो०॥ वीर प्रकाशे एम, साभल जो गौतम मुनि । असन्नी बहु जीव, हणे हणावे आप सु ॥८७॥
प्र०४२॥सो०॥ पूछे गौतम स्वामी, सुनो प्रभु शासन धनी । तप चाहे नही होय, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥८८॥
उ०॥ इन्दव-छन्द॥ तप करे बहु जाप करे; करतूत करे चित्त मान धरावे ।
अपने आगल कोई गिने नही; और ही साधु को नाम धरावे ॥
और करे अन्तराय देवे पिन, हेतु कु हेतु घनो बतलावे ।
ये ही पूर्व कर्म किये; इम कारण गौतम ! तप न थावे ॥८९॥
प्र०॥४३॥सो०॥ कोई होवे जीव, साधु ने वलि साधवी । वल्लभ न लगे कोई, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥ ९० ॥
उ०॥सो०॥ तरुण पंचेन्द्री जीव, सतापे पीडा करे । हे गौतम ! एह कर्म, उदय आये पूर्व किये ॥ ९१ ॥
प्र०॥४४॥सो०॥ कोई ससारी जीव, माता ने वलि तात ने । वल्लभ न लागे तेह, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥ ९२ ॥
प्र०॥सो०॥ इम भाखे भगवन्त, सुन वच्छ गौतम माहरी । विकलेन्द्री बहु जीव, हने हनावे हर्षसुं ॥ ९३ ॥

प्र०॥४५॥ सो० ॥ पूछे गौतम स्वामी, तरुण पणे कोई पुरुष ने। घर नारी मर जाय, किसा ? कर्म प्रभाव थी ॥६४॥
उ०॥ सोरठा ॥ प्रकाशे अरिहन्त, सांभल जो गौतम मुनि, तिव्र भाव जेन, मैथुन सेव्या पूर्वे ॥ ६५ ॥
प्र०॥ ४६ ॥ सोरठा ॥ इन्द्रभूति अणगार, पूछे श्री गुरुदेव ने। जो नर पिंगलो थाय, किसा ? कर्म पूर्व किये ॥६६॥
उ०॥ सोरठा ॥ आखें श्री वर्द्धमान, सांभल जो गौतम मुनि । फल फूल वनराय, सधाणा पावे हाथ सुं ॥ ६७ ॥
प्र०॥४७॥सोरठा॥ पूछे गौतम स्वामी, प्रकाशो केवल धनी। तिरिया पुरुष विजोग, बाल पणे होवे किन कर्मे ॥६८॥
उ० ॥ सोरठा ॥ कहैं केवल भगवान, सांभल जो गौतम मुनि ॥ मैथुन की अन्तराय, दीधी छै नारी पुरुष ने ॥६६॥
प्र०॥४८॥सोरठा ॥ आखो श्री गुरुदेव, पूछे गौतम स्वामी जी ॥ स्वेद थकी दुर्गन्ध, आवे छै किन ? कर्म थी ॥१००॥
उ०॥चौबोला-छन्दः॥ कहैं भगवान शुक्ल पद ध्यान; ये ही मुख वचन हमारे हैं।

पूर्व भव मदिरा जिन पीधी; तिव्र भाव पसारे है ॥
दूध पतासे अमृत भोजन, इन सु चित न धारे है ।
मदिरा सु पूर्व चित्त राख्यो; पाई गंध असारे हैं ॥१०१॥

प्र०॥४६॥सो०॥ पूछे गौतम स्वामी, कहो स्वामी वर्द्धमान जी। साचा बोले जीव, कोई प्रतीत आवे नही ॥१०२॥
उ०॥सो०॥ आखैं श्री महावीर, सुन वच्छ गौतम माहरी ॥ जो कोई कूड़ी साख, भरे घनी पूर्व भवे ॥१०३॥
प्र०॥५०॥सो०॥ कहैं गौतम कर जोड़, स्वामी कृपा कीजिये। नगरी राजा होय, वल्लभ न लागै किन ? कर्मे ॥१०४

उ०॥सो०॥ भाखै श्री गुरुदेव, सुन वच्छ गौतम साहगी । नर्क थकी फिर आय, अकाम निर्जरा अतिकरी ॥१०५॥

प्र०॥५१॥सो०॥ पूछै गौतम स्वामी, घने जीव ससार मे । उद्यम करें अपार, दारिद्र जावे नही ॥१०६॥

उ०॥त्रिभंगी–छन्द ॥ भाखै भगवान, सुनो वच्छ ज्ञान, आगम पद जान, हिये चीनी ।

पूर्व भव नाही, सुपात्र माही, दीयो नहीं दान, अकारज कीनी ॥

देता ने देखी, घनो पच्छताय, हिये बिलताय, चिन्ता लीनी ।

कोई देता दान, दई अन्तराय, इने कर्मा कर धन हीनी ॥१०७॥

प्र०॥५२॥सो०॥ गौतम कहैं कर जोडि, शीस नमी गुरुदेव ने । जिन मार्ग धर्म पाय, किन कर्मे समकित बमें ॥१०८॥

उ०॥इन्दव–छन्द॥ प्रभु जी भाषें सुन हो वच्छ गौतम; मूल को अन्तर बात हमारी ।

मोहनी कर्म को बन्ध करे जीव; सत्तर कोडा कोड सागर भारी ॥

उन्हत्तर कोडा कोड खपे; एक कोडा कोड रहै उदारी ।

याके इकतीस भाग करे; एक भाग बाकी रहें मोहनी धारी ॥१०९॥

दोहा—एक भाग बाकी रहै, मोह कर्म दल माहिं । तिन ही दलका प्रेरिया, धर्म थकी डिग जाहिं ॥११०॥

प्र०॥ ५३॥सो०॥ पूछै गौतम स्वामी, सत गुरु कृपा कीजिये । सयम पाले साधु, अकस्मात् चारित्र बमें ॥१११॥

उ०॥सो०॥महावीर कहैं एम, कूप ताल ने बावड़ी । गाम नगर मिनसाय, इस दाने सयम बमे ॥११२॥

प्र०॥५४॥सो०॥ गौतम कहैं मुनीश, कोई नर सुख भोगवे। खावे पीवे सोय, भलो न लागे कोय ने ॥११३॥
उ०॥सो०॥ कहैं ज्ञानी गुरुदेव, कोई प्रति लाभे साधु ने। अलप देत बहु भाष, एह कर्म पूर्व किये ॥११४॥
प्र०॥५५॥सो०॥ कोई नर धनवान, सम्पत्ति ऋद्धि घर मे घनी। खावन पीवन नही पाय, किसा कर्म प्रभाव थी ॥११५॥
उ०॥सो०॥ कहे स्वामी महावीर, सुन वच्छ गौतम माहरी। दान देई पछताय, भोग अन्तराय बांधे सही ॥११६॥
प्र०॥५६॥सो०॥ प्रकाशो जिन राय, पूछै गौतम स्वामी जी। समुच्छम नर माहि, किम कर्मे जीव ऊपजे ॥११७॥
उ०॥श्रवणी-छन्दः॥ वीर कहैं सुनो वच्छ एक माहरी। कोटवाली तनो कर्म कियो जाहरी ॥
तीव्र भाव करी नर घना मारिया। एम समुच्छम अवतार पिन धारिया ॥११८॥
प्र०॥५७॥सो०॥गौतम पूछै स्वामी, रक्त पित्त रोगी होवे। देह रहै अग्नि समान, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥११६॥
उ० ॥सो०॥ आखें श्री वर्द्धमान, सुन वच्छ गौतम माहरी। मित्रा वट्टनो काम, कीधो छै जिन पूर्वे ॥१२०॥
प्र०॥५८॥सो०॥ प्रश्न पूछै एह, प्रभुजी भूख लागे घनी। मर्यादा लघ जाय, कौन ? कर्म प्रभाव थी ॥१२१॥
उ०॥सो०॥ गौतम प्रति एम, भाषें श्री महावीर जी। कृषान कर्म कराय, हल खेडा धरती मध्ये ॥१२२॥
प्र०॥५६॥सो०॥ आखें गौतम स्वामी, प्रभु जी कोई नर होवे। अंगुलिया षट पाय, छांगा होवे किन कर्मे ॥१२३॥
उ०॥गीत-छन्दः॥ अरिहन्त भाषें सुनो गौतम; एह बात अचम्भए। पूर्व भवे जे जीवने; कीधो घनो आरम्भए ॥
झाड़ वृक्ष घना बिनाशे; स्थम्भ कपट कारणे। इस कर्म के प्रभाव गौतम; षष्ट अगुल धारणे ॥१२४॥

प्र०॥६०॥सोरठा॥ गौतम कहै कर जोड, नर भव दही पायके । इन्द्री हीना थाय, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥१२५॥
उ॥कुन्डली-छन्दः॥ वीर कहै संसार मे; जीव करें बहु पाप। कृत कर्म जाने नहीं; दुःख पावे नित्य आप।
दुःख पावे नित्य आप; घोर एह अन्य ससारा। रग बाल नो कर्म करे; और रजकर धारा।
करे घनो आरम्भ शक नही कोई आवे। आरने कृति प्रभाव गाम (इन्द्री) नो हीनो थावे ॥१२६॥
प्र०॥६१॥सोरठा॥ गौतम कहे कर जोड, दीन दयाल कृपा करो। मृगी होवे रोग, नर ने कौन ? कर्म थकी ॥१२७॥
उ०॥इन्दव-छन्दः॥ ज्ञानी अचल गिर शासन नायक, वीर प्रभु एम बखानो ।
गौतम शक नही इन वाक में; तीनों ही लोक मे ध्रुव प्रमानो ।
जो कोई धमनी धमे लुहार की; रात्रि दिवस आरम्भक जानो ।
ऐसे ही पूर्व पाप किये जिन; मृगी नो रोग होवे सिर ठानो ॥ १२८ ॥
प्र०॥६२॥सोरठा॥ प्रश्न पूछे एह, हाथ जोडी भगवन्त ने। पांचेन्द्री प्रतिपन्न, पावे छे किम कर्म थी ॥१२९॥
उ०॥इन्द्रवज्र-छन्दः॥ देवाधि देवो अरिहन्त देवो। पुनीत वयणं सुनो वच्छ एवो ॥
सत्य वाक्य गुण-ग्राम जिन धर्म करतो। इनी पुन्य पाच इन्द्री पूरी धरतो ॥ १३० ॥
प्र०॥६३॥सोरठा॥ पूछे गौतम स्वामी, दीन दयाल प्रकाशिये। जल मे डूबे नाव, समुदानी किम कर्म थी ॥१३१॥
उ०॥अडिल्ल-छन्दः॥ वीर कहैं सुन वच्छ; अहोगिर माहरो। सुन कर एहवा वयण; कपे चित्त ताहरो।

मूत्र माही मूत्र, पुरीष मे जो करे । इन ही कर्म प्रभाव, जीव जल मे हरे ॥ १३२ ॥

प्र०॥६४॥सो०॥ प्रश्न पूछे एह, श्री गौतम भगवन्त ने । बाल मरण की चाह, नर ने उपजे किस कर्मे ॥ १३३ ॥

उ०॥मनहर-छन्दः॥ श्री अरिहन्त देव, वचन कहत एव, चेत कर सुनो वच्छ, शंक नहीं आनिये ।

जीव तो अज्ञान माही, माया मद रह्यो छाही, साधु की संगत नाही, बुद्धि केम जानिये ।

अभक्ष को करे आ-हार, रात दिन निराधार, साधु वर्जे बार २; एक ही न मानिये ।

इन ही कर्म कर; मिथ्या की प्रकृति धर; नर भव बाल-मरण चित आनिये ॥ १३४ ॥

प्र०॥६५॥सो०॥ गौतम पूछे एम, कोई के मुख नाक मे । खेन घनो संयोग, आवे छै किम कर्म थी ॥ १३५ ॥

उ०॥सो०॥ गुरु कहे सुन वच्छ एह, कूप ताल ने बावडी । जल सींची ने सुकाय, पूर्व कृति थी दुःख लहे ॥१३६॥

प्र०॥६६॥सो०॥ गौतम कहे कर जोड, प्रकाशो शासन धणी । सिर गोडे बहुदुःख, उदर शूल किम कर्म थी ॥१३७॥

उ०॥दुमल-छन्दः॥ भाखे भगवन्त महा निग्रन्थ सुनो वच्छ गौतम एह बानी ।

जो करुणावन्त होवे जीवड़ा जिन पीड पराई पहचानी ॥

एक इन्द्री अन्न थई प्रमत्त भूने भुनाय सककानी ।

इस कर्म जीव सहे स्वमेव महा दुःख घोर वेदना जानी ॥ १३८ ॥

प्र०॥६७॥सो०॥ गणधर गौतम स्वामीः हाथ जोड़ी इम वीनवे । मनुष्य मरी पृथ्वीकाय, उपजे है किम कर्म थीना ॥१३९

उ०॥चौपाई॥ गौतम ने जपे जिनराय । जो कोई मृषा बोले वाय ॥
कूडी (झूठी) सोम गुरांनी खाय । इम कर्मे जीव पृथवी माय ॥ १४०॥

प्र०॥६८॥सो०॥ हाथ जोडी तिनवार, गौतम पूछे वीर ने । अपकाया मे जीव, उपजे है किम कर्म थी ॥१४१॥

उ०॥चौबोला-छन्दः॥ सतगुरु कहै मिथ्या केवलकर हांसी करत अपारी है। कूडा आल देवे परमार्थ न गिने पापलगारी है ॥
साधु-सन्त जावें मार्ग मे तिन की हास उचारी है। एही कर्म किया पूर्व भव जल काया जीव खारी है ॥१४२

प्र०॥६९॥सो०॥ कर जोडी कहे एम, गुरु प्रति गौतम मुनि । कृत नपुंसक थाय, कौन ? कर्म थी जीवडा ॥१४३॥

उ०॥शकर-छन्दः॥ ज्ञाता विज्ञाता दिष्टराता; इम कहे जिनराज । जो जीवडा नर नारीनो; सजो मेले अकाज ॥
पिन मानके वश जीवडा; व्याहे नात राजो राय । पूर्व कर्म वश जीवडा; कृत नपुंसक थाय ॥१४४॥

प्र०७०॥सो०॥ गुरुने शीस नमाय, हाथ जोडी गौतम कहे । वेश्या नो भव पाय, कौन ? कर्म पव किये ॥१४५॥

उ०॥कवित्त-छन्दः॥ महावीर अरिहन्त बखाने; सुन गौतम माहरी मुखवानी ।
जो कोई नर जग मे होवत, पातक लसु डरपत नहिं जानी ॥
जन्तु पीलनी कर्म करत है; बहुत कपास पिलावत आनी ।
इस कर्माकर गणिका होवत; सुन गौतम एह जैन बखानी ॥१४६॥

प्र० ७१॥सो०॥ पूछे प्रश्न एह, प्रभु ज्ञान प्रकाशिये । लघुवय धौला केश, दान्त झडे किस कर्म थी ॥१४७॥

उ० ॥ सो० ॥ वीर कहै वच्छ ! एह; फल फूल वन गाय जे । नर्म नर्म बहु खाय, पीले केश दान्ते पडे ॥१४८॥

प्र०७२॥सो० ॥ सतगुरु शीस नमाय, पूछे गौतम स्वामी जी । गड़ गुम्मड तन माहीं, भरे फूटे किस कर्म थी ॥१४९॥

उ०॥मनहर-छन्दः॥ कहत शमकर महावीर जिनवर इन्द्र भूति सुनो तुम म्हारी बात सीख की ।
जग मे अज्ञानी नर पाप करी पिंडभर जीवन के भाजे नित्य डाल जैसे ईख की ।
अम्ब फल चीर २ लून मिरच पीसकर भर तिन माहीं शूल खोसे सब टीख की ।
अम्ब जीव कर्म वश ताहु को न कोई तरस उन पापकर गड़ गुम्मड अशेष की ॥१५०॥

प्र०७३॥सो०॥ इन्द्रभूति अणगार, पूछे वीर जिनेन्द्र ने । दास पनो जे पाय, एह जीव ने किस कर्म थी ॥१५१॥

उ०॥कडखा-छन्दः॥ श्री महावीर गम्भीर धीर चतुर, गौतम स्वामी ने एम भाख्यो ।
जो कोई लूणी-माखन घना काल लग एकठा करीने तेह राख्यो ॥
रसिया जीव तिन माहीं उपजे घने बहुत जीवां तनो कूड थापो ।
पूर्व जीव ने कर्म ऐसा किया तासे छै दास नो जन्म आयो ॥१५२॥

प्र०७४॥सो०॥ गौतम कहे कर जोड़ि, शासन नायक भाषिये । रोग होवे नासूर, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥१५३॥

उ० ॥सो०॥ कहैं ज्ञाता जिनराज, सुन वच्छ गौतम माहरी । कसाई नो काम, कीधो छै पूर्व भवे ॥१५४॥

प्र०७५॥सो०॥ प्रश्न पूछे एम ! गौतम जी भगवन्त ने । कोढी नगरो रोग, उपजे कौन ? कर्म थकी ॥१५५॥

उ०॥छप्पय-छन्द॥ कहे स्वामी महावीर सुनो वच्छ गौतम गणधर। पूर्वले भव जीव घना पातक दल सचर।
गर्दभ घोडा ऊंट और गजराज कहावत। इनके मूत्र माही बहुत ले खार रमावत॥
अपराधी तन सींच कर ऊपर मार दवे घणी। इन कर्म कर गोयमा कीडा नगरा तन भणी॥१५६॥
प्र०७६॥सो०॥ गौतम पूछे एम, अन्य योनि छे गर्भ मे। मांस फुड तिन माही, उपजे छे किन कर्म थी॥१५७॥
उ०॥ त्रुटक-छन्दः॥ भगवन्त गिरा इक भय हरणा। वन वृक्ष तना उद्यम करणा।
आरम्भ करत वन फल हरणा। इम कर्म फल भुडक धरणा॥१५८॥
प्र०७७॥सो०॥ स्वामी कहो विचार, कोई तप बहुता करे। कोई न कर परतीत, सन्मुख निन्दा सब करे॥ १५९॥
उ०॥सो०॥ कहे स्वामी जिनराय, फल फूल वन राय नो। सराणा अतिशय, नीलण फूलण बहु जमे॥१६०॥
प्र०७८ ॥ सो०॥ गौतम पूछे एम, कोई नर सु हित करे। खावे पीवे सोय, तो पिण अवगुण बोलवे॥१६१॥
उ०॥सो०॥ उत्तर दे जिनराज, सुन वच्छ गौतम माहरी। कणोई नो काम, जिन कीधो पूर्व भवे॥१६२॥
प्र०७९॥सो०॥ शिष्य कहे शीस निमाय, कहा स्वामी शासन धनी। कोई ने देव वस्तु, लेन हार वाँछे नहीं॥१६३॥
उ०॥सो०॥ कोई नर जे होय, सराणा पाथ रणा। बहुत काल लग राख, जीव जोनि उपजे घनी॥१६४॥
प्र०८०॥सो०॥ हाथ जोडी ने एम, प्रभुजी कृपा कीजिये। सोना ही राज रोग, समकाले होई किम कर्मे॥१६५॥
उ०॥इन्दव-छन्दः॥ वीर कहे सुन हो वच्छ गौतम, ज्ञान को उत्तर एक हमारो।

इख नो खण्ड करे बहु भांति सु, जतु पीलत निश दिन मागे ॥
काज अकाज वन्न कटावत. वृक्ष नो छाग करे खग्गधागे ।
ऐसे ही पूर्व पाप किये जिन; सोलह अर्मी (गे) तन माही उचारो ॥१६६॥

प्र०८१॥सो०॥ प्रश्न पूछे एह, सतगुरु कृपा कीजिये । गर्भ माही जो जीव, कट २ जन्मे किस कर्म ॥१६७॥

उ०॥त्रिभर्गी-छन्दः॥ आखें अरिहन्त श्री भगवन्त जगत गुरु सन्त महा ज्ञानी ।
जो देवे दान महा ग्द्धिवान आगम सुख जान हर्ष आनी ॥
कुपात्र आवत दान दिरावत मन सुख पावत अज्ञानी ।
कुपात्र दान तणे प्रभाव गर्भ माहिं कट २ जन्मानी ॥१६८॥

प्र०८२॥सो०॥ पूछे गौतम स्वामी, जो कोई जीवडा गर्भ मे । अधूरा पड जाय, कौन ? कर्म पूर्व किये ॥१६९॥

उ०॥मनहर-छन्दः॥ लागी है उपाधि सुन अपने कर्म कर; गौतम या माही शक रच नही आनिये ।
साधु आवे घर माहिं वन्दना करत नाहिं; अप्रतीत देवे दान भलो नही जानिये ॥
हेलना करे अहार खिष्ट करे बार २, नही पूजा सत्कार ऐसो दुष्ट जानिये ।
ऐसो ही मनुष्य होई भारी कर्मी जानो सोई; गर्भ में अधूरा डिगजाय सत्य मानिये ॥१७०॥

प्र० ८३॥सो०॥ कर जोड़ी ने एम, गौतम कहे जिन देव ने । बारह वर्ष गर्भ माहिं, मनुष्य रहे किम कर्म थी ॥१७१॥

उ०॥गीति-छन्दः॥ अरिहन्त श्री भगवन्त भाखे सुनो गौतम एहवी । जो अपना कर्तव्य कमावे गति पावे तेहवी ॥
लघु चिन्ता मट कर पेसाब टकठारो करे । इम कर्म कर बारह वर्ष लग गर्भ माही भव धरे ॥१७२॥
प्र०॥८४॥सो०॥ गौतम कहे कर जोड़ि । मनुष्य गर्भ मे ऊपजे ॥ दो भव वर्ष चौवीस । स्वामी रहे किम कम थी ॥१७३॥
उ०॥इन्द्रव-छन्दः॥ बुद्धि विचारो आगम बल गौतमः माहरे वाक् मे शक न आनो ।
तिव्र भावसु मैथुन सेवत्तः काम अन्धो न हो पाप गिनानो ॥
मैथुन माज डवे नर नारी कोः भाडो खावे महा कर्म बन्धानो ।
असे ही पूर्व कर्म किये मुनः गौतम वर्ष चौवीस रहानो ॥१७४॥
प्र०॥८५॥सो०॥ स्वामी कोई नर होई । विल विलाट करे घनो ॥ नित्य रहे तन रोग । कौन ? कर्म पूर्व किये ॥१७५॥
उ०॥चामर-छन्दः॥ वीर जिन राज ज्ञान भानु बुद्धि धार है । इन्द्र भूति अभि मुख एम ही उचार है ॥
फूल फल वृक्ष दल अग्नि माहिं डारते । भून भून हर्ष होई पाप न विचारते ॥१७६॥
प्र०॥८६॥सो०॥ तिर्थकर ने आप । पूछे गौतम स्वामीजी ॥ उत्तम कुल मे आय । पीछे नीच कारज करे ॥१७७॥
उ०॥सो०॥आखे श्री जिनराज । तरु कर्थार आगर करे ॥ बणज करे कराय । इस कर्मे नीचो होवे ॥१७८॥
प्र०॥८७॥सो०॥ शीस नर्मा जिनराय । श्री गौतम पूछा करे ॥ नारी बज्झा होई । कौन ? कर्म प्रभाव थी ॥१७९॥
उ०॥इन्द्रव-छन्दः॥ गौतम कु प्रसाद करी तिहां; भाखे जिनद अपने मुख वाणी ।

जो कोई गौतम है नर नारी; कुसम दल हाथ करे निज हाणी ॥
केवडा चंप गुलाब बहु विध; मोतिया चन्द चमेली बखाणी ।
असे ही इनर कहावत पूर्व: तिम कर्म वञ्झा गति आणी ॥१८०॥
प्र०॥८८॥सो०॥ कहे गौतम कर जोड, प्रभुजी कृपा कीजिये । मृत वन्छा (मृतवञ्झा) होई नार, कहो स्वामी किस कर्मथी॥१८१
उ०॥सो०॥ उत्तर दें जिनराज । जो 'कोई होई जीवडा । अकूरा वनराय । ऊगता चंटे घना ॥१८२॥
प्र०॥८९॥सो०॥ कहे गौतम अणगार । हाथ जोडी भगवन्त ने ॥ पुरुष वञ्झा जो होई । कौन ? कर्म पूर्व किये ॥१८३॥
उ०॥रोडक-छन्द॥ वीर कहे सुन एक वाक् उत्तम वन्छ माहरो । जो करते नर नारी ज्ञान बिन पतित अपारो ॥
फल फूलन बहु छेद बीज कु अग्नि सिकावत । पाप गिने नहीं कोई पूर्व नर बञ्झा थावत ॥१८४
प्र०॥९०॥सो०॥ गौतम कहे जिन राज । कोई नर बहु नारियां ॥ एकगे पुत्र न होई । कौन ? कर्म किया पिछे ॥१८५॥
उ०॥मनहर-छन्द॥ प्रभुजी कहत सुन गौतम विवेक वान, एहवात ज्ञान करी जरूर धार लीजिये ।
जग मे मलीन नर कारज मलीन करः विष्ठा म लिपत होई देह सब भींजिये ॥
चण्डाल कम कर कोई न शर्म गरः हिंसा कर दिन रात क्रमि दल लीजिये ।
असो जग होई नर मातंग कर्म करः इस कम गोयमा अपुत्रीय रहीजिये ॥१८६॥
प्र०॥९१॥सो०॥ गुरु ने शीस निमाय । गौतम जी पछा करे । चोरी कर मर्दाव । बाट पाडे छे किम कर्म ॥१८७॥

उ०॥भमरी-दोहा॥ प्रभु भाखे शिष्य कु । तू ही ज्ञाता (श्रा) सार ॥ जो ही कादे मद्य कु । श्रासी पीवे मार ॥१८८॥

प्र०॥६२॥सो०॥ कहे गौतम सिर नाम । वीर जिनंद चरणा विषय ॥ गल फांसी देई मार । कोई नर किम कर्म थी ॥१८९

उ०॥इन्दव-छन्द॥ प्रभु निरागी बखानत हे यूं; गौतम जी एह मर्म सुनीजे ।

जो कोई करुणा रहित हो नर, छाग अरु भेड का कंठ छेदीजे ॥

तुर्क कु तरस न आवत हे घट, हिन्दू को धूल की दच्छणा दीजे ।

चौपद का शिर छेद करे एह; पाप थकी गल फांसी पडीजे ॥१९०॥

प्र०॥६३॥सो०॥ कहे गौतम जिनराज । दीन जान प्रकाशिये ॥ जन्म मरण को दुःख । पामे छे किम कर्म थी ॥१९१

उ०॥चौपाई॥ गौतम प्रति कहे जिनराय । जो कोई साधु निन्द कराय ॥

बहु तीर्थनी करे उथाप । जन्म मरण उपजे इन पाप ॥१९२॥

प्र॥६४॥सो०॥ हाथ जोडी ने एम । पूछे गौतम स्वामी जी ॥ तिम माता दुःख पाय । कौन ? कर्म पूर्व किये ॥१९३॥

उ०॥ इन्द्रवज्र-छन्द॥ देवाधि-देव महावीर देव । तरमाय सारे बहु जीव भेव ॥

जल पान रोके करुणा न धारे । एह कर्म संतान नो दुःख भारे ॥१९४॥

प्र०॥६५॥सो०॥ गौतम पूछे एम । जो कोई अणगारने ॥ प्रति लाभन का भाव । दे न सके कुछ हाथ सु ॥१९५॥

उ०॥मनहर-छन्द॥ वीर जी कहत एम सुनो वच्छ ! करी प्रेम; अपने कर्म कर अनुभाग पाइये ।

कोई नर जग माही पाप कुछ गिने नाही; मान कर पार की तो आत्मा दुःखाइये ॥
मर्म वचन कहे पर हिये घाव रहे; छानी बात पार की तो जग में प्रकाशिये ।
ऐसो ही कर्म कर पूर्व जन्म माहिं; अन्तराय कर्म दान देन की उपाइये ॥१९६॥

प्र०॥९६॥सो०॥ पूछे गौतम एम । प्रभुजी कृपा कीजिये ॥ देह शक्ति जो पाय । शुद्ध समायक ना करे ॥१९७॥

उ०॥सो०॥ वीर जिनन्द प्रकाश । गौतम प्रति एहवी ॥ सिमाई नो आ-हार । कीधा छे जिन पूर्वे ॥१९८॥

प्र०॥९७॥सो०॥ प्रश्न पूछे एम । श्री गौतम जिन राज ने ॥ कोई रे तन माही । मैल घनी होई किम कर्मे ॥१९९॥

उ०॥दोहा॥ वीर जिनन्द प्रकाशियो । गौतम प्रति एह ॥ आमा पीरो पूर्वे । तेह तनो फल एह ॥२००॥

प्र०॥९८॥ हाथ जोड़ीने पूछ । मैल नासिका मुख विषय ॥ मुख को प्राण मे आय । कौन ? कर्म पूर्व किये ॥२०१॥

उ०॥इन्द्रव-छन्दः॥ स्वामी जिनन्द कहे वच्छ गौतम; एक अचंभे की बात सुनाऊँ ।
जैसे सनातन ज्ञानी वखानत; ऐसे ही ज्ञान की बात बताऊँ ॥
जो कोई जीव ने रमण करे नित्य; जैन मे नही प्रमाण धराऊँ ।
ऐसे कर्म कर एह दुःख पावत; कर्म विपाक मे तो ही बताऊँ ॥२०२॥

प्र०॥९९॥सो०॥ गौतम पूछे एह । कोई भले कुल ऊपजे ॥ वरते घने अन्याय । राजा चोरंगो करे ॥२०३॥

उ०॥चोबोला-छन्दः॥ वीर धीर गभीर जिनेश्वर; कहे गौतम सुझ वाक् सुनो ।

जो कोई मूल खरा (खोटे) बृक्षो की: मन म होई हर्ष घनो ॥
नेक विचार करे नही मन मे: निर्दयी नो व्यवहार बनो ।
पूर्व कर्म किया जिन गोतम, दुःख भोगे चोरग तनो ॥ २०४ ॥

प्र०॥१००॥मो०॥ प्रभुने पूछे एम । हाथ जोड गोतम मुनि ॥ अग कीया लगे आल । कौन ? कर्म प्रभावथी ॥२०५॥

उ०॥कवित्त–छन्द॥ महावीर भगवन्त कहे सुन: वच्छ गोतम उत्तर इन बात ।
गर्भ गलावत जो तिरिया को, खोटे द्रव्य औषधि साथ ॥
पाच इन्द्री की घात करत है: हाथ कछु नही आवत जात ।
इस कर्मा कर सुन हो गोतम: कूडा (झूठा) आल माथे नर आत ॥२०६॥

प्र०॥१०१॥मो०॥ गोतम पूछे एम । हाथ जोडी भगवन्त ने ॥ उद्यम करे अपार । एक अक्षर आवे नहीं ॥२०७॥

उ०॥मो०॥ प्रभुजी भाषे एह । सुन वच्छ गोतम माहरी ॥ ज्ञान तनो मद कीय । इन कर्मे मूर्ख भवे ॥२०८॥

॥दोहा॥ एह ग्रन्थ पूरो थयो, गोतम पृच्छा नाम । कर्म विपाक सरूप एह, निश्चय भाख्यो स्वामि ॥२०९॥
गुरु पसाय कर एह थई, पूरी ग्रन्थ की रीत । हिवे आगल मत गुरुतनो, करू नाम प्रसिद्ध ॥२१०॥

॥ ग्रन्थ-कर्ता की गुर्वावलि ॥

मनहर—छन्दः ॥ पूज्य जी महा निधान श्री मन जी ऋषि जान; तत शिष्य अन्तेवामी पूज्य नाथूराम जो ॥
तत शिष्य विनयवान श्री बुद्धिवन्त जान; स्वामी श्री रायचन्द ज्ञान के सुधाम जी ॥
तत शिष्य पदांबुज गुरां के सेवन हार; स्वामी श्री रतिराम बोध पद पाम जी ।
तिनके प्रसाद ज्ञान तत्व निर्धार कर कवि: नन्दलाल कही पावत आराम जी ॥२११॥

दोहा॥ वीर विक्रमादित्य के, संवत ठारह सय मांय । ऊपरि नव्वे साल है, ग्रन्थ रच्यो सुख दाय ॥२१२॥
जन पद जंगल देश मे, नगर सुनाम मझार । ग्रन्थ रच्यो इन नगर मे, सत गुरु नाम आधार ॥२१३॥
जो नर पढे विवेक सु, हृदय ज्ञान विचार । जैन धर्म परतीत धर, ज्यु उतरे भव पार ॥२१४॥

॥श्लोक॥ मंगल लेखकानांच; पाठिकानांच मंगल । मंगल सर्व लोकाना, भूमौ भूपति मंगलम् ॥२१५॥

॥ कर्म विपाक गौतम—पृच्छा संपूर्णम् ॥

लिखत स्वामी जी श्री श्री श्री रायचन्द्र जी तत शिष्य अन्तेवामी स्वामी श्री श्री श्री रतिराम जी तत् शिक्षित
परम पूजनीय श्रीनन्दलाल जी जंगल देस सुनाम नगर मध्ये संवत्सर १८९० के सालः ॥
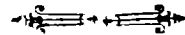
॥ चतुर्विन्शति स्तुति ॥ भजन नं० १

॥ मत्त नारी छन्द ॥

पभु आदि देवा, करे देव सेवा । महा णाण धार, अजितारि मार ॥ १ ॥ पभु सभव सामी, करो सिद्ध गामी, महा णाण धीर, अभिनन्द वीर ॥ २ ॥ पभु सुमति तात, महा बोध जात । पदम पभु देव, अरि नाम केवं ॥ ३ ॥ सुपास जगीस, कटी चित्त रीस । णमो चन्द सीम, महाराज धाम ॥ ४ ॥ सुविधि अगीसं, दई लोक सीसं । महा सीत-लजी, करी दग रीस ॥ ५ ॥ पद दास कुब्व, पभुअम सब्व । वासु पुज्ज देव, हरि आर सेवं ॥ ६ ॥ पवरगं निवासं, जगैविमललास । अनन्तंच सामी, सदा णाण धामी ॥७॥ महा बोध धार, धम्म नाथ वीर । सबे लोक सान्ति, अहो सन्त सान्ति ॥ ८ ॥ नराधिच कुंथुं महा णाण गुथुं । अरच सामी, असीयच गामी ॥ ९ ॥ मल्लीनाथ देवं, करे देव सेवं, हरि बस जाम, मुनि सुव्रत साम ॥१०॥ पभु नमि नाथं, गहो मम हाथ । अरिह च देवं, लखो लोक भेवं ॥ ११ ॥ पभु पास देवा, करो पार खेवा । महावीर सामी, अलकार जामी ॥१२॥ कवि नन्द भास, अरिहन्त दासं । पदाम्बुज सेव, रतिराम देव ॥ १३ ॥

॥ चतुर्विन्शति तीर्थंकर स्तुति ॥ भजन नं० २

चाल निर्मोही राजा की

तुम सिमर २ श्री आदि जिनेश्वर देवा, करू मैं अजित जिनेश्वर तीन काल मुनि सेवा, संभव जिन तीजो केवल

कमला धामी, अभिनन्दन चौथे कपि लन्छन चरणधामी, श्रीसुमति प्रभुजी के लच्छन कुंज वियानी, श्रीपद्म प्रभु अरिहन्त लाल वरनाणी, सुपार्श्व सिमरेयां पार होवे जग खेवा. तुम सिमर सिमर नित्य आदिजिनेश्वर देवा ॥१॥ चन्द्र सम देही चन्दा प्रभु जिनराया श्री सुविधि जिनेश्वर पुष्पदन्त कहाया, शीतल जिन स्वामी धर्मोऽधर्म बताया, श्रेयांस जिनेश्वर मोक्ष मार्ग पद ठाया,हिंगल् सम देही वासु पूज्य जग गाया,महिक लन्छन सत्तर धनुष्यकी काया,जिन कर्म खपावी मोक्ष गये जिन देवा, तुम सिमर सिमर नित्य आदि जिनेश्वर देवा ॥२॥ कपिल पुर स्वामी विमलनाथ जिन राई, श्री अनन्त जिनेश्वर ज्योति अनन्ती पाई, दस पचम स्वामी धम्मनाथ जगगाई, श्री शांति जिनेश्वर सब जगशांति कराई, कुरुवंशी उपन्यो कुन्थुनाथ करुणाई, तिण मातमो चक्रि अरे जिनेश्वर थाई, सुख संपतिदायक महीनाम जिन लेवा, तुम सिमर सिमर नित्य आदि जिनेश्वर देवा ॥३॥ हरिवंर्मा उपन्यो मुनि सुव्रत जिनवरक, नमो नमि जिनेश्वर टाली जो मुभ दुख नरक, श्री अरिष्टनेमि अरुचपो पगतल सुरक, पार्श्वतन नीलो अवगहना नव करक, श्री वीर जिनेश्वर शासन नायक धरक, वन्दे थिक चक्रि सुर नर किन्नर हरष, जिन ध्यान धरन्या पावे उसे नित्य सेवा, तुम सिमर सिमर नित्य आदि जिनेश्वर देवा ॥४॥ श्री गौतम गणधर चरणो मे शीस नमाई, श्री मदिर प्रमुख वीस तीर्थंकर ध्याई अनन्ती चौवीसी ने वन्दे वह शिव पद पाई, जिन वानी को निश्चल मन कर ध्याई, संवत ठारामे साल उनासी के माही, पजाब देस होस्यारपुर मे गाई सतगुरु प्रसाद ऋषि रतिराम कहे एवा, तुम सिमर सिमर नित्य आदि जिनेश्वर देवा ॥५॥
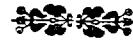
वीर स्तुति ॥ भजन नं० ३ ॥

विदर्भ देश महि मडल मोभे; कुन्दनपुर शुभ ठाम । तिहां आपण शहर बाजार मनोहर; सुन्दर मन्दर धाम ॥
तिहां जन्म भयो श्री जिनवर केरो; गरवा गुण गम्भीर । तिहा चरम जिनेश्वर; श्री परमेश्वर मैं वन्दू महावीर ॥ १ ॥
राजन पति राजे सुर पति साजे: गाजे तेज प्रताप । सिद्धार्थराया जगत सुहाया; जस गाया सुख आप ॥
तिस घर राणी जिनमति जाणी: त्रिशला नाम सुधीर । तिहा० ॥२॥ सुरपद छोडी जिनवर आयो; त्रिशला उर अव-
तार । सुपने चर्तुदश माता निरखी; हर्षी चित्त अपार । शुभ वेला जायो हर्ष सवायो; सुरपति करें अशीर ॥ तिहां०
॥३॥ छप्पन कुमारी हर्ष अपारी; जीतव्य चार कराय । सुरपति आवी ने मेरु न्हुलायो; महोच्छव सकल कराय ।
भंडार भरे ऋद्ध सपति सेती; वस्त्र ने वलि चीर ॥ तिहां० ॥४॥ सिद्धार्थराया महोच्छाया; गावे गीत रसाल ॥
वन्दीजन छोडी हर्ष प्रमोदी: मूकी दान विशाल । तिहां नाम दियो श्रीजिनवर केरो; वर्द्धमान सधीर ॥ तिहां० ॥४॥
गृह वास बसाना जिन प्रधाना: तीस छमच्छर जान । सुर लोकांतिक ने प्रति बोध्या; दीनो वर्षी दान ॥ प्रभु साथ सयम
कोई न लिधो; सेवक दाम अमीर । तिहां० ॥६॥ साडे बारह वर्ष प्रभु जी ने; करी तपस्या घोर ॥ पीछै प्रभु
जी ने केवल लीधो: जिम सूरज चलकोर । चार हजार ने चार सो एक दिन: कीरो मुनि सुधीर ॥ तिहां०॥७॥ गौतम
आदिक साधु प्रभु जी के: हुये चौदह हजार । छत्तीस सहस्र अर्जका प्रभु जी का; सगला ही परिवार ॥ भव्य जीव प्रभु

ने बहुतारे; ईश्वर ने वलि कीर ॥ तिहां०॥८॥ चण्ड कोशिया प्रभु ने तारा; दे उपदेश अपार ॥ स्वर्ग आठ मे सुरपद पायो; लहसी भव जल पार ॥ शीतल लेस्या मूक बचायो, गोशालो जिम तीर ॥ तिहा०॥६॥ मेघकुमार ने डिगतो राख्यो; पूर्वभव प्रकाश ॥ जमाली तारा पदरा भव मे; करसी शिवपुर वास ॥ गुण अनन्ता भगवन्ता, बलवन्ता बलवीर ॥ तिहां० ॥१०॥ श्रेणिक राजा चेलणा राणी, आये दर्शन काज । साधु साध्वी रूप देख के; किया नियाणो सार ॥ देई उपदेस शुद्ध करायो; दोनी धीर प्रधीर ॥ तिहां०॥११॥ व्रत नही पचक्खान असंजतिः करणी नही कुछ पास । मगध देश ईश्वर महाराजा, श्रेणिक चित्त हुलास ॥ आप समो तें कियो तिर्थंकर; होसी भव जल तीर ॥ तिहा० ॥१२॥ एम अनेक प्रभु जी ने तारयां; कीधा पर उपकार ॥ गरवा नर से जे गुण करसे; एह जग नो व्यवहार ॥ जो कोई प्रभु जी रा गुण गावे, तोडे कर्म जंजीर ॥ तिहां० ॥१३॥ सवत् अठारह में साल ठासिये; लुदहानेर माय । श्री रतिराम गुरुदेव प्रसादे, नन्दलाल गुण गाय ॥ जो कोई श्रावक पढे सुने सुख अपने; दुर्गति होवे तजीर ॥ तिहां० ॥१४॥ इति ॥

श्रावक के २१ गुण वर्णन ॥ भजन नं० ४ ॥

गुण एक बीस कहूँ श्रावक के; सुनन्या आचर्ज पाय जी । गुणग्राही श्रावक जिनकेरो; सॉभलत्यॉ सुख थाय जी ॥ टेक पहिले बोले समकित वन्ता; दूजे हो व्रतधार जी । तीजे लज्जावन्त जो होवे; चौथे शील आचार जी ॥१॥ पॉचमे बोले दयावन्त कहिये; छठे विनय विवेक जी । गुणग्राही सानमें रद करिये; आठवे पर उपकार जी ॥२॥

नवमे श्रावक ईश्वर वन्ता; वली होवे गुणधार जी । ग्यारहवे मब जीवों को बल्लभकारी, अवमर जानण हार जी ॥३॥ तेरहवें श्रावक अैसा होवे; जैन धर्म पर राग जी । चौदहवे घर मर्याद नहीं होवे तो; हीन दीन मत भाख जी ॥४॥ पंदरहवे घर मर्याद जो होवे; मान करे नहीं कोय जी । मोलहवे समदृष्टी पुरुषो की; अविनय करे नहीं जोय जी ॥५॥ सत्तारहमे मिथ्या दृष्टी सू; वाद करे नहीं आप जी । पापकारी उपदेश न देवे; बोल अठारवें जान जी ॥६॥ उन्नीसवे श्रावक अैसा होवे; दया धर्म सावधान जी । बीसमे श्रावक कूडाआल ना देवे; उत्तम श्रावक जान जी ॥७॥ एक बीसमे श्रावक अैसाहोय, जिस कार्यमे उपजे अप्रतीत जी । सो कार्य श्रावक नहीं करना; एह उत्तम पुरुषोकी रीत जी ॥८॥ सतगुरु प्रसादे यह गुणगाया; होस्यारपुरे मझार जी । संवत अठारहमें मास चौमासी; ऋषि रतिराम उचार जी ॥९॥ इति

उपदेशिक-भजन नं०५ ॥

तू समझ२ नादान किया नर क्या नर भव पा के ॥ अचली ॥ मैल मूत्र तन अशुचि लिपट के रहा गर्भ मा के । तेरे बीत गये नव मास पडा जब धरणी पर आके ॥ तू०॥१॥ बालापन लडकन मे खेला हित चित हुलसा के । तन रतन अमोलक खोय दिया नर धोकेमें आके ॥ तू०॥२॥ तरुण समय उन्मत हुआ वस माया कायाके। वृद्ध भया गुण ज्ञान हरा तृष्णा ने भरमा के ॥ तू०॥३॥ तीनों पन दिये खोय मुफ्त विषयन में भटका के । कुछ नफा हुआ नहीं रच गांठ से चला दाम खाके ॥ तू०॥४॥ अब चेते क्या होय काल जब आया मुँह बाके । नन्दलाल यूं कहे सभा मे सबको समझाके ॥तू०॥५॥

म

पृच्छा

चतुर्विन्शति तीर्थंकर स्तवन ॥ चाल-आरती ॥ भजन नं० ६ ॥

ॐ जय जिन ओंकारा; प्रभु जय जिन ओंकारा। जन्म मरण मिटावो प्रभु जी; करो भवोदधि पारा ॥ टेक ॥

केवल लोकं अवलोकं; तीर्थंकर पद धारी २ प्रभु। त्रिलोक दयाल जग प्रतिपाल; गभीर भारी ॥ ओं० ॥१॥

कर्म दल खंडन शिव मग मडन; चन्दन मम शील२ प्रभ पट काया रक्षण मन रिपु भक्षण;तत क्षण आनन्दं ॥ओं०२॥

श्री ऋषभ अजित समव अभिनन्दन; शान्तिकर्तारा २ प्रभु। सुमति पद्म सुपार्श्व चन्दा प्रभु; राज तिहारा ॥ ओं०॥३॥

सुविधि शीतल श्रेयांस; वासु पूज्य धीरं २ प्रभु। विमल अनन्त धर्म शांति जिनेश्वर; सागर गम्भीर॥ ओं०॥४॥

कुंथु अरे मल्ली मुनि सुव्रत; तीन भवन स्वामी २ प्रभु। नमि नेम पार्श्व महावीर जी; पचम गति पामि ॥ ओं०॥५॥

गौतम गणधर मुनिवर गुणधर; देव मुनि सेवं २ प्रभु। बखाण सुनन्ते मन आनद, पावें जिन भेवं ॥ ओं०॥६॥

जो जीव आराधे जिनमत साधे; पावें शिव ठाम २ प्रभु। नन्दलाल तेही सुख पावे; जो ले जिन नाम ॥ ओं०॥७॥ इति